मजलूम की बददुआ से बचो

मुहम्मद अज़हर मदनी

हदीसे कुदसी में है अल्लाह तआला ने अपने अंतिम पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फरमायाः ऐ मेरे बन्दो! मैंने अपने ऊपर जुल्म को अवैध कर लिया है और मैंने तुम्हारे बीच भी अत्याचार को हराम कर दिया है इसलिये तुम एक दूसरे पर अत्याचार न करो। (सहीह मुस्लिम)

अत्याचार अम्न व शान्ति को भंग करता है, हर इन्सान समाज और अपने आस पड़ोस में सुख शान्ति चाहता है, यह किसी भी राष्ट्र, समाज, समुदाय के लिये अत्यंत ज़रूरी है। अल्लाह तआला अपने बन्दों को संबोधित किया है कि अत्याचार को मैंने अपने ऊपर हराम कर लिया है और मैं बन्दे पर भी अत्याचार को पसन्द नहीं करता हूं। अल्लाह तआला का यह फरमान अत्याचार के महा पाप होने को दर्शाता है।

मजलूम के बारे में कहा गया है कि उसकी बददुआ रद नहीं होती है, और यह सर्वमान्य है कि जब किसी को बददुआ लग जाती है तो कोई दवा और दौलत काम में नहीं आती है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तीन प्रकार की दुआ के कुबूल होने में कोई सन्देह नहीं है एक तो मजलूम (पीड़ित) की दुआ, दूसरे मुसाफिर की दुआ और तीसरे औलाद के हक़ में बाप की दुआ। (इब्ने माजा)

इसी तरह अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ लोगो मजलूम की बददुआ से बचो क्योंकि पीड़ित (मजलूम) और अल्लाह के बीच कोई रूकावट नहीं होती है। (सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम) हदीस का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला मजलूम की दुआ को जल्द कुबूल कर लेता है।

समाज में हर तरह के इन्सान पाये जाते हैं, कोई गरीब है तो कोई मालदार, कोई कमज़ोर है तो कोई ताक़तवर, कोई सीधा सादा है तो कोई उजड। अल्लाह तआला ने जिसको ताक़त दी है, चाहे वह माली एतबार से हो या शज्ञरीरिक एतबार से, इन्सानियत यह है कि वह ताक़तवर अपनी ताक़त का इस्तेमाल कानून की सीमा में रहते हुए कमजोरों की मदद करने में करे ऐसे लोग समाज की दुआओं के पात्र बन जाते हैं, लोगों से दुआएं मिलती हैं, इसके विपरीत जो अपनी ताक़त और दौलत का गलत इसतेमाल करते हैं वह मजलूमों की बददुआ का शिकार हो जाते हैं और ऐसे लोग दुनिया में खसारा उठाने के साथ मरने के बाद वाले जीवन में भी अजाब दिये जायेंगे। इसलिये हम सभी को कमजोरों को सताने और किसी तरह का अत्याचार करने से बचना चाहिए और अल्लाह ने जो ताक़त व दौलत दी है उसका इस्तेमाल सकारात्मक कामों में करना चाहिए। अल्लाह तआला हम सभी लोगों को कमज़ोरों की मदद करने और अल्लाह की दी गई ताक़त और दौलत का सहीह इस्तेमाल करने की क्षमता दे। आमीन

मासिक

इसलाहे समाज

दिसंबर 2023 वर्ष 34 अंक 12

जुमादल उखरा 1445 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)

4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद

दिल्ली-110006

फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613

RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. मज़लूम की बददुआ से बचो 2

2. सम्पादकीय 4

3. क़ब्र में अज़ाब क्यों होता है? 6

4. अनाथ का माल खाना महा पाप 09

5. बच्चों के प्रशिक्षण से संबन्धित कुछ बिन्दुएँ 11

6. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं एवं उपदेश 13

7. प्रेस रिलीज (चांद नज़र आ गया) 15

8. आत्म हत्या इस्लाम में हराम है 16

9. दहेज़ की रोक थाम कैसे की जाये 20

10. देश प्रेम 26

11. अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन) 28

ईमेल:-

Jaridahtarjuman@gmail.com

Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- www.ahlehadees.org

इन्सान का स्थान और उसकी परीक्षा

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

इन्सान अल्लाह की सर्व श्रेष्ठ सृष्टि है उसका स्थान बहुत ऊंचा और सबसे निराला है। इन्सान को यह स्थान मिलने के बाद यह जता और बता दिया गया है कि अगर शुक्र करो गे तो और ज्यादा बहुत कुछ पाओ गे और अगर नाशुकरी करो गे तो सब कुछ खो दो गे और सख्त सज़ा भी पाओगे और इससे आगे बढ़कर अत्याचार, अधिकार हनन करो गे तो बहुत घाटे में रहो गे, स्वयं पछताओगे और अज़ाब के सज़ावार होगे। उस वक़्त तुम्हारे यह माल जिसे तुम सैंत सैंत कर रखते थे और इस सिलसिले में हलाल व हराम का अन्तर खोये बैठे थे वह तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेंगे। पवित्र कुरआन में तुम्हारे लिये पाठ, उपदेश के बहुतेरे सामान उपलब्ध करा दिये गये हैं, तुम्हारे लिये मार्गदर्शन किया गया है, भली बुरी बातें समझा दी गई हैं और तुम्हें इसके अच्छे और बुरे अंजाम से अवगत किया गया। इसके लिये बहुत मोहलत दी गई, खुश नसीब और सौभाग्यशाली हैं वह जिन्होंने नसीहत हासिल कर ली और नाकाम और घाटे में रहे वह जिन्होंने कान नहीं धरा और हाय दुनिया हाय दुनिया करते करते मर गये। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

'' और जब हम इन्सान पर अपना इंआम करते हैं तो वह मुंह फेर लेता है और किनाराकश हो जाता है और जब उसे मुसीबत पड़ती है तो बड़ी लम्बी चौड़ी दुआएं करने वाला बन जाता है। '' (सूरे फुस्सिलत-५१)

अल्लाह जब इन्सान को माल व दौलत देकर आज़ामाता है तो वह फूले नहीं समाता खूब गुनगुनाता है और इतराता चला जाता है और कहने लगता है कि देखो मेरी कितनी इज्ज़त और हैसियत है। हमारे पास दौलत की रेल पेल है। अल्लाह तआला खुश है तभी तो उसने हमें नवाज़ा है, वह हमारी हैसियत और इज्ज़त व सममान को बढ़ा रहा है वह अधिकतर उसका शुक्र अदा करना भूल जाता है। वह समझता है कि अगर अल्लाह तआला हम से नाराज़ होता तो हमें क्यों इतना देता। बहुत से ऐसे लोग हैं जिन के माल में कोई बरकत ही नहीं होती। यही हाल परिवार, सम्मान और पद का भी है। इसे ढील पर ढील मिलती चली जाती है, माल औलाद की अधिकता होती चली जाती है, दिन बदिन विकास और निर्माण के चरण तय होते रहते हैं और इन्सान ग़फ़लत में पड़ा इस को आज़माइश और परीक्षा न जान कर रब का नाफरमान बनता चला जाता है और इस आज़माइश में फेल हो जाता है। वह समझता है कि सब ठीक है इसलिये इतनी करूणा हो रही है और हमारा रब खुश है। इस भौतिक दुनिया में यह अधिकांश दीनदारों का हाल है, दुनियादारों का हाल तो और ज़्यादा खराब और बदहाल है और न उनका कोई पुरसाने हाल है उनके लिये ''उन्हें थोड़े दिनों उनके हाल पर छोड़ दें''। कह दिया गया है और पुण्य व प्रकोप का इन्तेज़ार है।

इन्सानों का दूसरा गुट वह है

जिस की रोज़ी तंग कर दी गई, रोज़ी बड़े नपे तुले अन्दाज़ में मिली, न माल की रेल पेल और न औलाद की अधिकता बल्कि अधिकतर भूख की नौबत, ऐसे में वह इन्सान कह डालता है कि हमारे रब ने तो हमारी दुर्गत बना दी और हमारी जिल्लत व अपमान का सामान कर दिया और हमारी इज्ज़त घटा दी। यह भी दौलत का पुजारी, वह भी दौलत का शिकारी, दोनों दौलत के भिकारी और इसके साथ वफादारी के आदी, फर्क़ केवल इतना है कि एक दौलत पा कर इसी को ही सब कुछ समझ कर अपने इज्जत का सामान गर्दानता है जबकि दूसरा इसी दौलत को ही सब कुछ जानता है और न मिलने पर इसको सब कुछ समझ कर अपनी गरीबी और तंगदस्ती पर शिकायत करता है कि उसको दौलत न मिली। उन्हें इतना नहीं मालूम कि अल्लाह देकर भी आज़माता है और लेकर भी आज़माता है।

सच तो यह है कि तुम न रोज़ी पा कर न नेमतों में पल कर और न सम्मान व सज्जनता की जिन्दगी हासिल करके रब का शुक्रगुज़ार बने और तंगदसती में सब्र व शुक्र से काम लिया और जीवन का स्तर और जीवन का मक़सद भौतिकता और दुनिया की प्राप्ती को ही क़रार दे लिया हालांकि तुम को जो कुछ मिला है रब ने दिया है दोनों हालतों में उसका शुक्र और सब्र से काम लेते, सेहत व तन्दुरूस्ती, जान व जिस्म यह दोनों आखें जिस से प्राकृति की विचित्र वस्तुएं देखते हों, तुम बताओ एक उंगली भी पैदा करेन और उसमें विभिन्न एहसासात, रेशे और रगें पैदा करने और वजूद में लाने में तुम्हारी कोई भूमिका है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः ''क्या यह बिना किसी पैदा करने वाले के खुद बखुद (स्वतः) पैदा हो गये या यह खुद पैदा करने वाले हैं? (सूरे तूरः३५)

अगर तुम कणभर इन नेमतों की कद्र करते तो हर हाल में यतीमों, बेवाओं, मजबूरों, अपाहिजों, अंधों और बहरों का ख्याल रखते। अल्लाह ने तुम को हाथ पैर दिये हैं तो बेपांव हाथ वालों के काम आते और उन पर रहम खाते, अरे हाथ न दो, पांव, जुबान और दिल मत दो मगर उनकी इज्जत तो करो और रब का शुक्रिया अदा करो।

लेकिन तुम्हारा मामला इतना खराब हो चुका है और दुनिया और उसकी दौलत के तुम इतने रसिया हो गये हो या उसके पीछे पड़ कर मिले न मिले, उसी के मतवाले और दीवाने और इसी पर मगस की तरह मर जाने वाले हो गये हो कि मीरास भी हड़प कर जाने की फिक्र में अद्वीतीय हो। तुम्हें न दुनिया में अपने मक़सद की परवाह है न आख़िरत में जवाब दिही की चिंता न मर कर बहुत संगीन व सख्त हालात में उसके सामने हाजिरी की फिक्र। आह! तुम्हें क्या हो गया है कि बाप दादाओं की जमा पूंजी तमाम रिश्तेनातेदार यहां तक कि मां, भाई बहन को भी छोड़ कर अकेले हड़प कर लेते हो।

तुम निस्वार्थ हो कर अल्लाह के बन्दे बन जाओ और उसी का हो कर रह जाओ, तुम्हारा रब बड़ा दयालु है उसने जिस हाल में रखा है उसी में आज्ञाकारी बन्दा बन कर खुश रहो और वही हर तरह की नेमतें दे रहा है उसी का शुक्रिया अदा करो, उसी का गुण गाओ क्योंकि वही हर तरह की प्रशंसा का पात्र है।

क़ब्र में अज़ाब क्यों होता है?

अबू अदनान सनाबिली

कब्र का अजाब सत्य पर आधारित है। अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन की विभिन्न आयतों में क़ब्र के अज़ाब का उल्लेख किया है और इसी तरह अल्लाह के संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी हदीसों में क़ब्र में मिलने वाली नेमतों और इसके अज़ाब का उल्लेख किया है। लेकिन सवाल यह है कि क़ब्र में इन्सान को अज़ाब क्यों दिया जाता है निम्नलिखित पंक्तियों में संक्षिप्त में इन कारणों का उल्लेख किया जा रहा है।

१. अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठेहरानाः अल्लाह तआला चाहे तो तमाम पाप को मआफ कर देता है लेकिन शिर्क हर्गिज़ मआफ़ नहीं करेगा। शिर्क के बहुत से नुक्सानात हैं लेकिन इन नुकसानात में एक नुक्सान यह है कि शिर्क करने वाले को कब्र में अज़ाब दिया जाता है। ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक बार जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू नज्जार के एक बाग़ में खच्चर पर सवार थे, उस वक़्त हम आप के साथ थे, यहां पर अचानक खच्चर बिदक गया वह आप को गिराने लगा (देखा तो) वहाँ छः या पांच क़बरें थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा ''इन क़ब्र वालों को कौन जानता है?'' एक ने कहा मैं जानता हूं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि ''यह लोग कब मरे थे? उसने कहा कि शिर्क करने की हालत में मरे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इन लोगों को क़ब्र में अज़ाब हो रहा है। अगर मुझे यह आशंका न होती कि तुम अपने मुर्दों को दफ़न न करोगे तो मैं अल्लाह तआला से दुआ करता कि क़ब्र के जिस अज़ाब की (आवाज़ों) को मैं सुन रहा हूं वह तुम्हें भी सुना दे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना चेहरा हमारी तरफ किया और फरमायाः आग के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो सब ने कहा कि हम आग के अज़ाब से अल्लाह की पनाह में आते हैं फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो। सबने कहा कि हम कब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह में आते हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तमाम फितनों से जो जाहिर हैं और जो गुप्त हैं, अल्लाह की पनाह मांगो। सब ने कहा हम फितनों से जो जाहिर हैं और जो गुप्त हैं अल्लाह की पनाह में आते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की पनाह मांगो सबने कहाः हम दज्जाल के फ़ितने से अल्लाह की पनाह में आते हैं। (सहीह मस्लिम २८६७)

जानवर भी कब्र के अज़ाब को सुनते हैं जैसा कि एक हदीस में अल्लाह के संदेशवाहक मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः क़ब्र के अज़ाब को जानवर भी सुनते हैं और क़ब्र की डरावनी आवाज़ को सुनकर वह खच्चर बिदका था जिस पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सवार थे।

२. निफाक़ः अगर इन्सान के अन्दर निफाक़ (दुराचार) पाया जाता हो तो उसको भी कब्र में अज़ाब होता है जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''और कुछ मदीना वालों में ऐसे मुनाफिक़ हैं कि निफाक़ (दुराचार) पर अड़े हुए हैं, आप उनको नहीं जानते, उनको हम जानते हैं, हम उनको दोहरी सज़ा देंगे, फिर वह बड़े भारी अज़ाब की तरफ भेजे जायेंगे'' (सूरे तौबाः १०१)

क़तादा बिन दिआमा सदूसी रह० और रबी बिन अनस रह० कहते हैं कि इस आयत में पहले अज़ाब से तात्पर्य दुनिया का अज़ाब है और दूसरा अज़ाब कब्र का है।

३. पेशाब के छींटों से परहेज़ न करनाः

इस्लाम धर्म ने अपने अनुयाइयों को सफाई सुथराई करने की प्ररेणा दी है और सफाई को आधा ईमान क़रार दिया है। सफाई करने पर प्रशंसा की गई है और सफाई न करने पर सज़ा की चेतावनी दी गई है। अधिकांश तौर पर देखा जाता है कि लोग पेशाब करते वक़्त लापरवाही करते हैं जबकि कोताही करने से कब्र में अज़ाब का सबब बन जाता है इस लिये हमारे लिये ज़रूरी है कि हम पेशाब करते वक़्त पेशाब के छींटों से बचें, और अगर किसी वजह से पेशाब का छींटा पड़ जाये तो तुरन्त साफ करें इसलिये कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक कब्र में अज़ाब पेशाब की वजह से हो गा इसलिये पेशाब की छींटों से बचो ''अल मोजमुल कबीर, तबरानी १११०४, सुनन दार कुतनी ४६६, शैख अल्बानी ने सहीहुत तरगीब वत तरहीब १५१/१ और सहीहुल जामें ३००२ में इस हदीस को सहीह क़रार दिया है।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अधिकतर कब्र का अज़ाब पेशाब की वजह से होगा (मुस्नद अहमद ३३१, मुस्नद अहमद के शोधकर्ताओं ने इस रिवायत को सहीह क़रार दिया है और शैख की शर्त पर करार दिया है।

४. गीबत और चुग्ली करनाः

गीबत और चुगली में समाज के अधिकांश लोग लिप्त हैं अगर कोई शख्स किसी मुसलमान की चुग्ली करता है तो सूरे हुजुरात आयत नंवबर १२ के अनुसार अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से गीबत के बारे में सवाल किया गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अपने भाई के बारे में इस तरह बयान किया जाये कि वह इसको नापसन्द करता हो। सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम ने पूछा कि जो बात कही जा रही है अगर यह बातें उसके अन्दर मौजूद हों तो? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर उसके अन्दर बयान की गई वह बुराई मौजूद है तो यह गीबत की श्रेणी में आता है और अगर उसके अन्दर मौजूद नहीं है तो यह झूठा आरोप है (सहीह मुस्लिम २५८९)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुज़र दो कब्र के पास से हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इन दोनों को अज़ाब हो रहा है और यह अज़ाब किसी बड़ी बात के लिये नहीं है इन में से एक पेशाब के छींटों से नहीं बचता था और दूसरा चुग्ली करता था। फिर आप ने एक ताज़ा टेहनी ली और बीच से फाड़ कर इसके दो हिस्से कर दिये एक एक टुकड़ा दोनों कब्र पर गाड़ दिया। सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हो ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने ऐसा क्यों किया? फरमायाः जब तक यह टेहनियां सूख न जायें शायद इन कब्र वालों के अज़ाब को हलका कर दिया जाये।'' (सहीह बुख़ारी ८१२, सहीह मुस्लिम २९२)

५. बिना वुज़ू नमाज़ पढ़नाः अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह के बन्दों में से एक बन्दे को कब्र में सौ कोड़े मारने का हुक्म दिया गया अतः वह अल्लाह से सवाल करता रहा और इसमें कमी की दुआ करता रहा यहां तक कि एक कोड़ा रह गया तो उसे एक कोड़ा मारा गया जिससे उसकी कब्र आग से भर गई और जब इससे यह सजा खतम हो गई और उसे होश आया तो उसने पूछा कि तुमने मुझे कोड़ा क्यों मारा? तो इसे बताया गया कि तुमने एक नमाज़ बिना वुज़ू के पढ़ी थी और एक मजलूम (पीड़ित) के पास से गुज़रे तो उसकी मदद नहीं की (मुश्किलुल आसार, तहावी ४/२३१ शैख अलबानी ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है।

६. मजलूम की मदद न करना

ऊपर बयान की गई अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत से मालूम हुआ कि मजलूम की मदद न करने से भी कब्र में अज़ाब होता है।

७. मैयत पर नौहा खुवानी से मैयत को क़ब्र में अज़ाब होता हैः मैयत पर नौहा खुवानी, रोना ध ोना हराम है। इस्लाम धर्म की शिक्षा यह है कि मैयत के परिवार वालों को सब्र व संयम का उपदेश दें, अल्लाह के फैसले को स्पीकार करें क्यों कि रोने, चिल्लाने और नौहा खुवानी से मुर्दे को अज़ाब होता है। उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुर्दे को उसकी क़ब्र में उस पर किये जाने वाले नौहा (रोने जोर-जोर से चिल्लाने) की वजह से अज़ाब दिया जाता है और एक रिवायत में है कि ज़िन्दों के रोने की वजह से मुर्दे को अज़ाब दिया जाता है'' (सहीह बुखारी १२२९, सहीह मुस्लिम ९२७)

इसके अलावा अहादीस से मालूम होता है कि कुछ कुकर्म करने से कब्र में अज़ाब दिया जाता है उनमें से कुछ को निम्न पंक्तियों में बयान किया जा रहा है।

झूठ बोलना संगीन समाजी अपराध है। झूठ बोलने वाला शरीअत की निगाह में अप्रिय है। झूठ बोलने को विभिन्न हदीसों में सख्त सज़ा की चेतावनी दी गई है।

समुरा बिन जुनदुब रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना एक खुवाब बयान करते

शेष पृष्ठ १९ पर

अनाथ का माल खाना और उस पर अत्याचार महा पाप

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी रह०

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''जो लोग अनाथों का माल खाते हैं वास्तव में वह अपने पेट आग से भरते हैं और वह जरूर जहन्नम की भड़कती हुयी आग में झोंके जायेंगे''। (सूरे निसा-१०)

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है ''और यतीम के माल के करीब न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतरीन हो यहां तक कि वह सिन्ने रूश्द को पहुंच जायें ''अर्थात बालिग़ हो जायें। (सूरे अंआम-१५२)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने हदीसे मेराज में फरमाया मेरा गुजर ऐसे लोगों पर हुआ जिन्हें कुछ लोग ठोड़ियों पर मार रहे हैं दूसरे लोग आग की चटटानें ला कर उनके मुंह में डालते हैं जो उनके नीचे से निकल जाती है मैं ने जिब्रईल से पूछा यह कौन लोग हैं (जिन को सजा दी जा रही है) कहा कि जो लोग यतीम का माल जुल्म से खाते थे आज वह अपने पेट में जहन्नम की आग भर रहे हैं। (मुस्लिम)

इब्ने कसीर ने अपनी तफसीर में आयत ''इन्नल लजीन याकुलूना अम्वालल यतामा की तफसीर में और सूरे इसरा के शुरू में इसे इबने अबी हाकिम की तरफ संबद्ध किया है इसकी सनद में अबू हरवन अल अबदी जिसका नाम एमारह बिन जौयन है मतरूक है और कुछ ने तकजीब की है जैसा कि तकरीब में है अतः लेखक का इस हदीस को मुस्लिम की रिवायत कहना भूल है।

ओलमा ने फरमाया कि यतीम (अनाथ) का संरक्षक अगर मोहताज है और भले तरीके से उसके माल में से इतना खा ले कि उसके मफादात की सुरक्षा हो और उसके माल में बढ़ोतरी होती रहे तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन अगर जरूरत से ज्यादा खर्च करे तो हराम है। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता हैः

और यतीम का जो सरपरस्त मालदार हो वह परहेज़गारी से काम ले और जो गरीब हो वह मअरूफ तरीके से खाये। (सूरे निसा-६)

मअरुफ (भले तरीके) से खाने के बारे में चार कथन हैं पहला यह है कि वह कर्ज के तौर पर खायेगा दूसरा यह है कि वह जरूरत के अनुसार बिना फालूत या बेजा खर्च के खायेगा तीसरा यह कि जरूरत के अनुसार इस आधर पर ले गा कि वह यतीम का कोई काम करेगा चौथा यह कि वह जरूरत पर लेगा लेकिन जब अदा करने की ताकत हो जाये तो उसे अदा करे और अगर ताकत न रख सके तो उसके लिये हलाल है। यह कथन इब्ने जौजी ने अपनी तफसीर (टीका) में नकल किया है। सहीह बुखारी शरीफ में है कि ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया कि मैं और यतीम अनाथ

की किफालत (भरण पोषण, देख भाल) करने वाला जन्नत में ऐसे होंगे। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने शहादत और बीच की उंगली से इशारा किया और दोनों के बीच कुशादगी की। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

यतीम की किफ़ालत यह है कि इसके मामलात की देखभाल की जाये उसके नफा और लाभ की निगरानी की जाये उसका खाना कपड़ा, उसके माल में बढ़ोतरी अगर वह जायदाद वाला हो यह सब उसकी किफालत में दाखिल है और अगर यतीम के पास माल नहीं है तो उसपर खर्च किया जाये उसको अल्लाह की खुशी के लिये पहनाया जाये और हदीस में ''लहू और लिगैरिही'' का जो शब्द आया है तो इसका अर्थ यह है कि यतीम चाहे रिश्तेदार हो या अजनबी अतः रिश्तेदार यतीम की देख भाल भरण पोषण दादा, भाई, मां, चचा, सौतेला बाप मामूं आदि करेंगे और अजनबी का रिश्तेदार हर कोई है अर्थात उसकी देख रेख सबकी जिम्मेदारी है। ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने किसी यतीम को अपने खाने पीने में शामिल किया यहां तक कि अल्लाह ने उसे मालदार बना दिया तो अल्लाह ने उसके लिये जन्नत वाजिब कर दी, सिवा इसके कि कोई ऐसा गुनाह कर दे जिसे बख्शा न जा सके। (तिर्मिज़ी, यह हदीस हसन सहीह है)

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जो किसी यतीम के सर पर हाथ फेरे जिसका वाली (मददगार) केवल अल्लाह है तो हर उस बाल के बदले में जिस पर उसका हाथ गुजरा है नेकी मिलेगी जिसने किसी यतीम बच्चे या बच्ची के साथ सदव्यवहार किया तो मैं और वह जन्नत में इस तरह होंगे। (अहमद)

एक आदमी ने अबू दर्दा रज़ियल्लाहो से कहा कि मुझको उपदेश कीजिये, फरमाया यतीम पर दया करो, उसे अपने करीब बिठाओ उसको अपना खाना खिलाओ क्योंकि मैंने अल्लाह के सन्देष्ठा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से सुना है कि आप के पास एक आदमी आया जो अपनी सख्त दिली का शिकवा कर रहा था, ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स० ने फरमाया जब तुम अपना दिल नर्म करना चाहो तो किसी अनाथ को अपने से करीब कर लो उसके सर पर हाथ फेरो अपने खाने से उसे खिलाओ यह तुम्हारा दिल नर्म कर देगा और अपनी ज़रूरत पूरी करने पर कादिर हो जाओ गे। (तबरी, अहमद)

इसी लिये ईश्दूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से बयान किया अनस बिन मालिक ने फरमाया कि अच्छा घर वह है जिस में किसी यतीम के साथ अच्छा व्यवहार हो रहा हो और बुरा घर वह है जिसमें किसी यतीम के साथ गलत व्यवहार हो रहा हो। वह शख्स अल्लाह का सबसे प्रिय बन्दा है जो किसी अनाथ और बेवा के साथ सदव्यवहार कर रहा हो। रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को वह्य की कि ऐ दाऊद यतीम के लिये हकीकी बाप की तरह रहो और बेवा के लिये दयालु पति की तरह और अच्छी तरह जान लो कि तुम जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे अर्थात जैसा काम करोगे वैसा ही बदला पाओगे।

बच्चों के प्रशिक्षण से संबन्धित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुएँ

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

बच्चे भविष्य में राष्ट्र के निमार्ण कर्ता होते हैं और उन्हें सही दीनी व नैतिक प्रशिक्षण दिया गया तो समझिये एक अच्छे और प्रबल समाज की सही बुनियाद डाल दी गई है। बच्चों के अच्छे प्रशिक्षण से एक आदर्श समाज वजूद में आता है क्योंकि अच्छा पौदा ही भविष्य में अच्छा परिणाम दे सकता है। बच्चों का पालन पोषण मां बाप की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से है और माल व औलाद दुनियावी ज़ीनत और सुगम जीवन गुज़ारने के संसाधनों में से है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''माल और औलाद तो दुनिया की जीनत हैं'' अगर यह जीनत शुभचिंतन, सही प्रशिक्षण और सकारात्मक परिणामों पर स्थापित हो तो कितनी महान जीनत बन जाती है। पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से हर शख्स संरक्षक है और हर एक से उसके अधीनों के बारे में पूछ ताछ होगी। इस हदीस की रोशनी में बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण हर मां बाप या अभिभावक की जिम्मेदारी है जिस के बारे में वह अल्लाह के सामने जवाब देह है।

बच्चों से संबन्धित कुछ प्रशिक्षणिक सुझावः

- बच्चों को रोजाना पढ़ी जाने वाली दुआओं को याद कराया जाए जैसे सुबह शाह की दुआ, घर से निकलने और दाखिल होने, खाने पीने और सोने जागने की दुआ, इन दुआओं को याद करना माँ बाप के लिये सदक़-ए जारिया हो जायेगा।
- बच्चों को नमाज़ और वुजू की शिक्षा दी जाए जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित है। हम देखते हैं कि बाज बच्चे बालिग हो जाते हैं और उन्हें अच्छी तरह वुजू करना नहीं आता या ठीक से नमाज़ पढ़नी नहीं आती इसलिये माँ बाप को चाहिए कि वह वुजू और नमाज़ की अहमियत के दृष्टिगत इसका विशेष ध्यान रखें क्योंकि नमाज़ इस्लाम का महान स्तंभ है।
- बच्चे जो सवाल करते हैं खास तौर से शरई मामलात से संबन्धित तो उन्हें नजरअंदाज़ न करें क्योंकि आप के जवाब से उनकी गलतियों का सुधार हो गा लेकिन अगर आप ने जवाब न दिया और किसी ने गलत बात उनके जहन में डाल दी तो यह गलती उसके अन्दर बाकी रहेगी और वह गलत रास्ते पर हमेशा लगा रहे गा इसलिये आप की यह कोशिश होनी चाहिए कि वह जब भी सवाल करें उनके साथ बात चीत करनी चाहिए।
- प्रयास करें कि छोटे बच्चों के साथ सीरत या मौजूदा हालात से संबन्धित एक सभा हो इसे किस्सा के माध्यम से प्रशिक्षण भी कहते हैं। यह भी संभव है कि हर हफ्ते उन्हें कोई न कोई इस्लामी तारीख की घटना सुनाई जाए जो मौजूदा समाज की पृष्टिभूमि में पाठप्रद हो इससे उन्हें दीनी मालूमात दी

जाए इससे उनके कैरियर पर अच्छे प्रभाव पड़ेंगे और उनका चरित्र बेहतर होगा।

❑ छोटे बच्चों के प्रशिक्षण के लिये उन्हें जमा किया जा सकता है चाहे वह एक ही खानदान के ही हों और उनके लिये एक साप्ताहिक सभा आयोजित की जाए जिसमें हर सप्ताह ईमान से संबन्धित छोटे छोटे कामों को व्यवहारिक रूप से अंजाम दिलाया जाए ताकि उनका मानसिक विकास हो जैसे सौ बार सुब्हानल्लाह, चाश्त की नमाज, वित्र नमाज़ की अदायगी वगैरह। यह हर उस शख्स के लिये सद-क-ए जारिया होगा जो इन बच्चों के साथ यह अमल करेगा।

❑ जिन जगहों पर अपने बच्चों के साथ रहना उचित हो साथ रहें ताकि वह आप से सीखें, ट्रेंड हों और उनकी सूझ बूझ में विस्तार पैदा हो, उनकी अपने पास मौजूदगी के वक़्त उनसे चर्चा और बात चीत करें।

❑ छोटी बच्चियों को घरेलू काम काज की आदत डालें ताकि वह प्रशिक्षित हो जायें उन्हें काम करने का तरीक़ा पैदा हो जाये और आत्मविश्वास और सकारात्मक अंदाज़ में सेवा की भावना पैदा हो।

❑ जब घर पर मेहमान आयें तो जितना संभव हो छोटे बच्चों को सेवा का अवसर दें ताकि आतिथ्य सत्कार (मेहमाननवाज़ी) स्वागत करने का तरीके और बड़ों की सभा के शिष्टाचार से वाकिफ़ हो सकें, इससे उनकी सूझ बूझ में बढ़ोतरी होगी।

❑ छोटे बच्चों को छोटी छोटी घटनाओं और वाक़आत को लिखने की आदत डालें, वक़्त गुज़रने के साथ इन में सकारात्मक परिवर्तन आयेगा और उनका अंदाज़ आनुक्रमिक (धीरे धीरे) बेहतर होगा।

❑ छोटे बच्चों को क़ुरआन करीम की शिक्षा की सभाओं से जोड़ें क्योंकि यह भलाई की मज्लिसें हैं इससे उनका अच्छा प्रशिक्षण होगा, बच्चे इन सभाओं में क़ुरआन भी पढ़ेंगे और याद भी करेंगे।

❑ छोटे बच्चों को बड़ों के सम्मान की आदत डालें और यह भी बताया जाये कि बड़ों की संगत में रह कर कैसे लाभ उठाया जा सकता है।

❑ बच्चों की हर मांग को पूरा करना ज़रूरी नहीं है क्योंकि कुछ मांग ऐसी होती है जिन में बच्चों का लाभ नहीं है और बच्चों को आश्वासन दिलाया जाये कि उनकी हर बात मानना ज़रूरी नहीं है।

❑ बच्चों की छोटी-छोटी गलतियों की अंदेखी करें क्योंकि छोटे बच्चे गलतियां करते हैं क्योंकि अगर हर बात पर टोकें गे तो उनका प्रशिक्षण कठिन हो जाएगा।

❑ बच्चों को कुछ देने में इन्साफ से काम लिया जाए यहां तक कि नजदीकी बनाने और मुहब्बत करने में भी क्योंकि बच्चे इन बातों को अच्छी तरह महसूस करते हैं।

❑ बच्चों की कुछ इस अन्दाज़ से तर्बियत की जाये कि उनके अन्दर दूसरों के साथ भलाई और सेवा करने का स्वभाव बन जाये।

❑ छोटे बच्चों को पूरा सलाम (अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, करने का प्रशिक्षण दिया जाये। जब बच्चे की जुबान से सलाम के पूरे वाकय सूत्र (कलिमात) अदा होंगे तो इससे इन्हें सलाम करने का ज़्यादा सवाब मिलेगा।

❑❑❑

ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं एवं उपदेश

नवास बिन समआन रज़ियल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २६४८)

अबू अय्यूब अनसारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा के लिये मुलाकात छोड़े इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी ६०७७ मुस्लिम २५६०)

उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से कहा ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी ५३७६ मुस्लिम २०२२)

अबू बकरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उमरा और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाही शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाही आये तो अपनी ताकत भर उसे शैतान की तरफ लौटा दे। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी-मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी

के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो गे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा हैं शर्त यह है कि कबीरा गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों की वजह से नहीं टूटता हैः सद-क-ए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मुर्दों को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरे बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो

बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहे गा मेरे जलाल से मुहब्बत करने वाले कहां हैं, उस दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, उस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम) अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो उस से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम हों। (बुखारी-मुस्लिम)

आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी)

(प्रेस रिलीज़)

जुमादल उख़रा १४४५ का चाँद नज़र आ गया

दिल्ली, १४ दिसंबर २०२३

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २९ जुमादल ऊला १४४५ हिजरी अर्थात १४ दिसंबर २०२३ जुमेरात को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और ज़ुलहिज्जा के चांद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चांद को देखने की प्रमाणित खबर मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक १५ दिसंबर २०२३ जुमा के दिन जुमादल उख़रा की पहली तारीख होगी।

आत्म हत्या इस्लाम में हराम है

डा० अब्दुत्तौवाब खान

आत्म हत्या का एक कारण तिजारत में नाकामी भी है मिसाल के तौर पर किसी जगह पर लगायी हुई पूंजी का डूब जाना चाहे यह घाटे के द्वारा हो, या किसी के कब्ज़ा कर लेने या फिर किसी प्राकृतिक आपदा के आ जाने से। इसी प्रकार आदमी का समाजी बाईकाट कर दिया जाना जिस से वह एकान्त में पड़ जाये। इसी प्रकार इन्सान का किसी लाइलाज बीमारी में लिप्त हो जाना मिसाल के तौर पर एड्स और कैन्सर आदि।

इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि सब लोग केवल परेशानी और तंगदस्ती की वजह से आत्म हत्या नहीं करते बल्कि कुछ लोग अपनी बहादुरी दिखाने के लिये भी यह हरकत करते हैं मिसाल के तौर पर एक शख्स ऊंची बिलडिंग से केवल इसलिये कूद पड़ता है कि वह यह दिखा सके कि उसके अन्दर ऊंचाई से कूदने की हिम्मत है जबकि कुछ लोग इसलिये भी आत्महत्या करते हैं ताकि वह दुश्मनों की पकड़ में न आयें।

आत्महत्या का एक कारण नशा आवर चीज़ें (मादक पदार्थों) का सेवन भी है जिसमें शराब और अन्य मादक पदार्थों का इस्तेमाल होता है वहां आत्महत्या की घटनाएं भी ज्यादा होती हैं जो लोग सिगरेट पीते हैं उनके दिमाग में धीरे धीरे विकार (फुतूर) पैदा होना शुरू हो जाता है सूझ बूझ की क्षमता खत्म हो जाती है जिस से वह एक व्याकुलता की दशा में लिप्त रहने लगते हैं अतः ज्यादा सिगरेट नोशी करने वाले आत्महत्या की तरफ भी सबसे ज्यादा मायल होते हैं। हशीश, अफयून और कोका के पत्ते कुछ देशों में पर्याप्त मात्रा में बिला रोक टोक मिलते हैं उनका प्रयोग भी समज में बड़े स्तर पर होता है, कुछ लोग इन पत्तों को सर्दी नजला और जुकाम से बचने के लिये इस्तेमाल करते हैं और बाज लोग इन्हें पानी में घोल करके इनर्जी डिरिन्क के तौर पर लेते हैं लेकिन जब इन्सान को इन पत्तों के इस्तेमाल की लत पड़ जाती है तो वह इसकी ज्यादा मात्रा भी इस्तेमाल करना शुरू कर देता है और फिर अन्जाम यह होता है कि वह स्वयं ही अपने ही हाथों अपनी जान लेने के लिये तैयार हो जाता है ताकि इन उलझनों से छुटकारा पा सके।

शराब और मादक पदार्थ हराम

इसी लिये इस्लाम धर्म ने खुमर (शराब) को हराम करार दिया है और खुमर केवल शराब ही को नहीं कहते हैं बल्कि खुमर अरबी भाषा में ''मा खाम-रल अक्ल'' अर्थात जो अक्ल को ढांप ले अतः हर वह चीज़ जिससे इन्सान की अक्ल पर पर्दा पड़ जाये उसकी समझ बूझ खत्म हो जाये वह चीज़ खुमर की श्रेणी में आती है चाहे वह शराब हो या नशा आवर गोली इन्जेक्शन या हशीश, अफयून और कोका के पत्ते या कोई भी दूसरी सूंघने वाली चीज हो जिससे आदमी अपना होश हवास खो बैठे ऐसे लोगों पर इस्लाम में सज़ा देने का कानून भी मौजूद है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है

ऐ ईमान वालो! बात यही है कि शराब और जुवा और थान वगैरह और पांसे के तीर यह सब गन्दी बातें शैतानी काम हैं इनसे बिल्कुल अलग रहो ताकि तुम फलाहयाब (सफलता) पा जाओ शैतान तो यूं चाहता है कि शराब और जुवे के द्वारा तुम्हारे आपस में दुश्मनी और बुग्ज डाल दे और तुमहें अल्लाह की याद और नमाज से तुमको बाज़ रखे सो अब भी बाज आ जाओ''। (सूरे माइदा-६१. ६२)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि हज़रत उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने अल्लाह के सन्देष्टा के मिंबर पर खुतबा देते हुये कहा जब शराब को हराम करार देने का आदेश नाजिल (अवतारित) हुआ तो शराब पांच चीजों से बनती थी, अंगूर, खुजूर, गेहूं, जौ और शहद से और खुमर वह है जो अक्ल (बुद्ध) को मखमूर (वेसुध, मदहोश) कर दे। (बुखारी-५५८८)

हज़रत आइशा रजिअल्लाहो अन्हा का कहना है कि अल्लाह के सन्देष्ट हज़रत मुहम्मद स०अ०व० से ''बित्अ'' के बारे में पूछा गया, यह शहद का मश्रूब था जिसे यमन वासी आम तौर पर पीते थे। अल्लाह के सन्देष्टा ने फरमाया हर मादक पदार्थ हराम है। (बुखारी ५५८६)

हज़रत तारिक बिन सुवैद अल जअ्फी रजिअल्लाहो तआला अन्हो ने नबी स०अ०व० से शराब के बारे में सवाल किया तो आपने इससे मना किया या उसके बनाने को नापसन्द किया उन्होंने कहा मैं इसे (शराब) को दवा के लिये बनाता हूं। सन्देष्टा मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया यह दवा नहीं बल्कि स्वयं बीमारी है। (सहीह मुस्लिम १९८४)

कुछ लोगों का कहना है कि जानवर भी आत्म हत्या करते हैं इस विषय पर उन्होंने असंख्य पृष्ठ काले कर डाले हैं लेकिन मैं इस बहस को बिल्कुल फुजूल मानता हूं इसलिये कि अनबोलती सृष्टि के बारे में पता लगाना इन्सान के बस की बात नहीं और जब आज के इन्सानों को जानवरों की बोलियों को समझने की क्षमता नहीं दी गयी है तो फिर जानवर के आत्महत्या करने के बारे में हम कोई राय काइम नहीं कर सकते। अगर एक कुत्ता ऊंचे पहाड़ की चोटी पर चढ़ता है फिर वहां से गिर पड़ता है या अपने आपको गिरा लेता है तो हमें इसे निश्चित रूप से आत्महत्या का नाम नहीं दे सकते। इस लिये कि हो सकता है कि कुत्ता ऊंची चोटी पर चढ़ते ही अपने होश व हवास खो बैठा हो और अपना संतुलन खो कर नीचे गिर पड़ा हो। इसी प्रकार किसी मछली या दूसरे जानवर के जख्मी होकर मरने से हम कदापि इसे आत्महत्या करार नहीं दे सकते। मैंने यहां पर कुत्ते और मछली की मिसाल इसलिये बयान की है क्योंकि बहुत से लोगों ने इन दोनों जानवरों के आत्महत्या करके मरने के बारे में विचित्र दलीलें पेश की हैं। मेरे नजदीक जानवरों के आत्महत्या के बारे में जितनी भी बातें कही गयी हैं वह सब काल्पनिक बातों (मफरूजात) पर आधारित हैं।

इतिहास में आत्महत्या करने वाले के साथ व्यवहार

प्राचीन इथेन्स शहर में सरकार की अनुमति के बिना आत्महत्या करने वाले को आम कब्रस्तान में दफन करने की इजाज़त नहीं थी बल्कि शहर के किसी कोने में अकेले उसको दफन कर दिया जाता था उस की कब्र जमीन से बराबर कर दी जाती थी ताकि लोगों को यह पता भी न

चल सके कि इस जगह किसी को दफन किया गया है। प्राचीन रूम यूनान में हुकूमत आत्महत्या को एक अपराध मानती थी ६७०ई० में फ्रांस के बादशाह लोयस १४ वां ने एक फरमान जारी किया जिसमें आत्महत्या करने वाले के लिये सख्त सजा का प्रस्ताव पेश किया गया था आत्महत्या करने वाले की लाश को उल्टा उसके चेहरे को नीचे की तरफ करके शहर के सड़कों पर घुमाया जाता था फिर उसे कूड़े के ढ़ेर में फैंक दिया जाता। १९वीं शताब्दी के अन्त में इंगलैन्ड में आत्महत्या करने का केवल प्रयास करना ही हत्या के समान माना जाता था १९६१ ई० में इंगलैण्ड में एक कानून के द्वारा आत्महत्या को अपराध ा मानने से इन्कार किया गया था। जहां तक हिन्दुस्तान का संबन्ध है तो यहां पर आत्महत्या गैर कानूनी है बल्कि अगर किसी घर में कोई शख्स आत्महत्या करता है तो घर के शेष लोग कानून की पकड़ में भी आ सकते हैं।

इस्लाम में आत्महत्या हराम और महा पाप है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है "और अपने आप को कत्ल न करो यकीनन अल्लाह तुम पर मेहरबान है और जो शख्स यह (नाफरमानियाँ) सर्कशी और जुल्म करेगा तो अन्करीब हम उसको आग में डाल देंगे और यह अल्लाह पर आसान है, अगर तुम इन बड़े गुनाहों से बचते रहोगे जिनसे तुम को मना किया जाता है तो हम तुम्हारे छोटे गुनाह दूर कर देंगे और इज्जत व बुजुर्गी की जगह दाखिल करेंगे"। (सूरे निसा-३१)

यहां अल्लाह तआला ने आत्महत्या करने वाले को बहुत कठोर दण्ड सुनायी है कि जो शख्स आत्म हत्या करेगा वह जहन्नम में जायेगा। पवित्र कुरआन की यही शिक्षा है जिसने इस्लाम जगत में आत्महत्या की दर को पूरी दुनिया में सबसे कम कर दिया है वर्ना गैर मुस्लिम देशों में दौलत की रेल पेल एवं अधिकता के बावजूद आत्महत्या की दर सबसे ज्यादा है।

अबू हय्यान कहते हैं कि इस आयत का अर्थ यह है कि इन्सान अपने आपको कत्ल न करे अर्थात इसमें आत्महत्या से रोका गया है।

आत्म हत्या करने वालों के बारे में हदीसों में कठोर दण्ड की चेतावनी दी गयी है। हज़रत साबित बिन जिहाक़ रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के सन्देष्ट ने फरमायाः किसी मोमिन पर लानत भेजना उसे कत्ल करने के बराबर है और जो शख्स दुनिया में किसी चीज से अपने आप को कत्ल कर ले तो उसे क्यामत (महा परलय) के दिन उसी चीज़ के द्वारा अजाब दिया जायेगा (इब्ने माजा-३४६०)

हज़रत अबू हुरैरह बयान करते हैं कि अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमाया जिसने पहाड़ से अपने आप को गिरा कर आत्महत्या करली वह जहन्नम की आग में होगा और इस में हमेशा पड़ा रहेगा और जिसने जहर पी कर आत्महत्या कर ली तो वह जहर उसके हाथ में होगा और जहन्नम की आग में वह इसी तरह पीता रहेगा और जिस ने लोहे के हथियार से आत्महत्या की तो उसका हथियार उसके हाथ में होगा और जहन्नम की आग में हमेशा के लिये वह उसे अपने पेट में मारता रहे गा। (बुखारी ५७७८)

मौत की दुआ और आशा नहीं करनी चाहिये

हज़रत अनस बिन मालिक बयान करते हैं कि अल्लाह के सन्देष्टा

मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः तुम में से कोई भी शख्स किसी संकट (मुसीबत) के आने पर मौत की आशा न करे बल्कि यह कहे ऐ अल्लाह मुझे उस वक्त तक जिन्दा रख जब तक कि जिन्दगी मेरे लिये बेहतर हो और मुझे उस वक्त वफात दे दे जब मेरे लिये वफात बेहतर हो। (इब्ने माजा ४२६५)

हज़रत अबू हुरैरह बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के सन्देष्टा को फरमाते हुये सुना है कि किसी शख्स का कर्म उसे जन्नत में कदापि नहीं ले जा सकेगा । सहाबा किराम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल आप का कर्म भी? आप ने फरमाया मेरा भी नहीं सिवाए इसके कि अल्लाह तआला मुझे अपने दया करूणा से नवाज दे। इस लिये कर्म में संतुलन एवं मध्यमार्ग अपनाओ और करीब करीब चलो और तुम में से कोई भी शख्स मौत की तमन्ना न करे इसलिये कि या तो वह अच्छा हो गा तो उसकी अच्छाई में और बढ़ोतरी होगी या वह बुरा होगा तो हो सकता है कि वह बुरे काम से तौबा कर ले। (बुखारी ५६७३)

शेष पृष्ठ ८ का

हुए फरमायाः हम चल दिये तो एक आदमी के पास पहुंचे जो पीठ के बल चित लेटा हुआ था और दूसरा शख्स उसके पास लोहे का आंकड़ा लिये खड़ा था। वह उसके चेहरे की एक तरफ आता और उसके जबड़े को गुददी तक, उसके नथुने को गुददी तक चीर देता...वह शख्स जिसके पास आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गये थे और उसका जबड़ा गुददी तक उसके नथुने गुददी तक और उसकी आंखें गुददी तक चीरी जा रही थीं वह ऐसा शख्स है जो सुबह अपने घर से निकलता है और सारा दिन झूठ बोलता है यहां तक कि उसका झूठ दूर तलक पहुंच जाए है (सहीह बुखारी ६६४०)

इस हदीस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि झूठ बोलना कितना संगीन पाप है।

इसी तरह से जानवरों को सताना, मारना, किसी का कर्ज़ लेकर उसका क़र्ज़ वापस न करना कब्र में अजाब का सबब बन जाता है। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें उन बुराइयों से बचने की क्षमता दे जो क़ब्र कों अज़ाब का सबब बनते हैं।

शेष पृष्ठ २५ का

से दिये जाने वाले सामान को लेने में क्या बुराई है? जब कि नबी स० ने फरमाया तुम में से जो शादी करने की ताकत रखे उसे शादी कर लेनी चाहिये। इस फरमान के अनुसार घर की जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी पति पर है। और एक अच्छे इंसान की पहचान यह है कि वह दूसरों की दौलत पर ललचायी निगाह नहीं डालता। इसी वजह से ऐसे लोग दूसरों की नजर में अच्छे माने जाते हैं लेकिन यहां तो मामला बहुत अजीब है कि दुल्हा तो कम लेकिन उसका बाप लालच से इतना धुत हो जाता है कि अगर उस का बस चले तो लड़की के बाप के शरीर से कपड़ा भी उतार ले। हदीस की किताब में बयान किया गया है कि एक आदमी नबी स० के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के संदेष्टा (रसूल) मुझे कोई ऐसा कर्म बता दीजिये कि अगर मैं उसको कर लूं तो अल्लाह मुझ से मुहब्बत करने लगे और लोग भी मुझसे मुहब्बत करने लगें, आप ने फरमाया दुनिया से बेरगबत हो जा, अल्लाह तुझ से मुहब्बत करेगा और लोगों के माल व दौलत से दूर रहो, लोग तुझे पसंद करेंगे।

दहेज की रोक थाम कैसे की जाये

लेखकः मौलाना समर सादिक रियाजी

अनुवादः नौशाद अहमद

हमारे समाज में कुछ रिवाजों ने इस तरह घुसपैठ बना ली है कि इस्लाम की साफ सुथरी छवि भी धूमिल हो गयी। कुछ लोगों को छोड़ कर हर शख्स इन रस्मों में इस तरह फंस गया है कि उसने यह अन्तर ही मिटा दिया है कि इन रस्मों का इस्लाम से भी कोई संबन्धा है कि नहीं? बल्कि यह भी समझा जाने लगा है कि इस्लाम का इन रस्मों से कोई टकराव नहीं बल्कि उसके अनुकूल है। अफसोस तो इस बात पर है कि अवाम तो अवाम पढ़े लिखे लोगों पर भी इन रस्मों का ऐसा जादू चला कि वह भी, सही, और गलत में फर्क से महरूम (वंचित) हो गये। इस लेख में समय की एक बुरी रस्म दहेज की कुर्आन व हदीस और सहाबा के रहन सहन की रोशनी में समीक्षा की गयी है? इस बात पर ज्यादा जोर डाला और छान बीन की कोशिश की गयी है कि क्या वास्तव में इस का इस्लाम से कोई संबन्ध है।

अल्लाह कुर्आन में फरमाता है ''ऐ मोमिनो आपस में एक दूसरे का माल बातिल तरीकों से ना खाओ'' शब्द ''बातिल'' में जाल साज़ी, मक्कारी सूद और जोर जबरदस्ती की तमाम सूरतें शामिल हैं और जहेज़ भी माल समेटने का एक ऐसा तरीक़ा है जिसकी इस्लाम में कोई गुंजाइश नहीं है बल्कि जहेज़ के नाम पर एक दूसरे का माल खाने में जोर जबरदस्ती भी है और हीला और मक्कारी भी, रसूल स० के आदर्श से लापरवाही और सहाबा के तरीकों की तौहीन और दूसरों का अनुसरण भी है।

इसमें किसी का मतभेद (इख्तेलाफ) नहीं है कि जहेज़ की मांग बिलकुल हराम और अवैध है लेकिन क्या बिन मांगे जहेज के नाम पर मिलने वाला सामान सूफा, वाशिंग मशीन कूलर, फ्रीज साइकिल कार और कैश लेने की इजाज़त इस्लाम देता है। हम तमाम मुसलमानों के लिये जरूरी करार दिया गया है कि अपने तमाम मामलात में मुहम्मद स० के जीवन को माडल बनायें। जैसा कि अल्लाह फरमाता है ''तो जो लोग अल्लाह और क्यामत पर यकीन रखते हैं उनके लिये अल्लाह के रसूल मुहम्मद स० की जिंदगी में बेहतरीन नमूना है'' इसलिये मुहम्मद स० की जिंदगी का मुतालआ (अध्यन) करते हैं कि क्या नबी स० ने अपनी लड़की दामाद या समधी को शादी के मौके पर कुछ दिया या खुद अपनी शादी के मौके पर बिन मांगे जहेज के नाम पर कुछ लिया? छिछोरपन पर उतरे कुछ लालची आरोप (इलजाम) लगाते हैं कि नबी स० ने हजरत फातिमा को उनकी शादी के मौके पर जमाने के अनुसार जहेज (दहेज) दिया था इसलिये अगर कोई शख्स अपनी खुशी से वक्त और जरूरत के मुताबिक गाड़ी घोड़ा रूपये पैसा देता है तो कोई हर्ज की बात नहीं है, यह आप पर और आप के इंसाफ पर बड़ा झूठा आरोप है। यह कैसे मुम्किन है कि इंसाफ वाहक मुहम्मद० स० फातिमा को जहेज का सामान दें और दूसरी बेटियों को इससे महरूम (वंचित) करें ऐसा वही कर सकते हैं जो अपने मकसद को पूरा करने के लिये जहेज के बैक ग्राउंड और

असबाब से मुंह फेरते हैं अथवा उपेक्षा करते हैं। हकीकत यह है कि आपने हज़रत फातिमा को उनकी शादी के मौके पर कुछ छोटी मोटी चीज़ें इस लिये दी थीं कि आप हजरत अली के सरपरस्त (अभिभावक) थे और हजरत अली के पास घर बसाने के लिये कुछ नहीं था आपने बाप की हैसियत से अली को घर बसने के लिये थोड़ी मोड़ी सामग्री (सामान) दिया था। मतलब यह है कि यह कुछ चीज़ें जिन्हें जहेज़ का नाम दिया जाता है फातिमा को नहीं बल्कि असल में हजरत अली को सहायता के तौर पर दिया था क्योंकि अगर आप ने फातिमा को जहेज दिया होता तो इंसाफ के मुताबिक अपनी तमाम बेटियों को जहेज देते। फर्ज की जिये अगर मुहम्मद स० ने अपने दामाद या बेटी को जहेज का कुछ सामान दिया था तो यह दलील पकड़ी जा सकती है कि अगर किसी का दामाद गरीब हो, परेशान हाल हो और बाप की छाया से महरूम (वंचित) हो तो उसको जहेज दिया जा सकता है लेकिन लोग ऐसे गरीब और बेमाल वालों के यहां शादी करने के लिये क्यों नहीं सोचते, उनकी निगाह ऊपर ही उठती है और इच्छा यह होती है कि कोई खाते पीते घराने का रिश्ता मिल जाये तो उसके यहां अपनी बेटी का रिश्ता लगा दें चाहे इसके लिये जमीन ही क्यों न बेचनी पड़े, कर्ज से दब जाना पड़े, तब भी पीछे नहीं हटेंगे। मेआर और कसौटी में कितना अंतर है। एक तरफ मुहम्मद स० एक गरीब परेशान हाल को सहारा देना चाहते हैं कि एब घर आबाद हो जाये और दूसरी तरफ खुशी के नाम पर जहेज इस लिये दिया जा रहा है कि उसकी बेटी ठाट बाट की जिंदगी गुजारे और हर तरफ से उसकी तरफ से दिये जाने वाले जहेज की खूब चर्चा हो जाये। अगर मुसलमान होने का दावा है तो क्यों नहीं नबी के जीवन को आदर्श बनाते और क्यों नहीं सलफे सालिहीन के नक्शे कदम पर चलना अपनी सफलता समझते। उनकी शादियों में परेशानी, ताम झाम और महीनों से तैयारी दूर दूर तक नजर नहीं आती है। रिश्ता पसंद हो जाने के बाद शादी हो जाती, लेन देन शादी में रूकावट नहीं बनता किसी गरीब की बेटी पैसा ना होने के सबब अपने बाप के घर बैठी बूढ़ी नहीं होती शादियों में नबी के आदर्श से मुंह मोड़ने का अंजाम हम भुगत रहे हैं। इबाहियत (जायज है, कोई गुनाह नहीं मिलेगा) का फितना समाज को खोखला कर रहा है। मुहम्मद स० ने सच फरमाया ''जब तुममें से कोई शादी का संदेश दे जिसकी दीनदारी और चरित्र से तुम राज़ी हो जाओ तो उसकी शादी कर दो, अगर ऐसा नहीं किया तो जमीन में फसाद (बिगाड़) पैदा हो जाये गा''।

यहां पर एक ऐसे शख्स की शादी का वर्णन (जिक्र) किया जा रहा है जिन्होंने मालदार होने के बावजूद बड़ी सादगी से अपनी शादी रचाई उस महान व्यक्ति का नाम अब्दुर्रहमान बिन औफ है। इनकी शादी की खबर नबी स० को भी नहीं हो पायी एक दिन आप की निगाह अब्दुर्रहमान बिन औफ पर पड़ी उनके कपड़े पर लगे जाफरानी रंग को देख कर पूछा तो कहा कि मैं शादी कर ली है, फिर आप ने पूछा कि महर कितनी दी है? उन्होंने कहा कि एक नवात सोना, इस पर सिर्फ इतना कहा कि वलीमा कर देना चाहे एक बकरी ही क्यों ना हो। यह नहीं पूछा कि जहेज के समान में क्या क्या मिला और ना यह शिकायत की कि तुम मुझे बारात क्यों नहीं ले गये। एक ऐसा आदमी जिस पर सहाबा जान निछावर करने के लिये तैयार रहेते थे, उनको बारात की दावत ना देना हमको क्या पैगाम देता है? इसका मतलब यही ना हुआ कि नबी स० और सहाबा की

शादियों में बारात का तसव्वुर ही नहीं था। आज कल अगर किसी करीबी रिश्तेदार ही नहीं बल्कि किसी आम आदमी को बारात की दावत ना दें तो मुंह लटका ले गा और सबसे शिकायत करता हुआ आपके वलीमे का बायकाट करेगा।

बारात पर जब आलोचना की जाती है और कहा जाता है कि चार छः लोग जाकर लड़की को ले आयें तो कुछ स्वार्थी लोग इस आलोचना का यह जवाब देकर बारात ले जाने का फतवा जारी करते हैं कि अगर कोई शख्स खुशी से बारात बुलाता और दावत खिलात है तो बारात पर बेतुका एतराज नहीं करना चाहिये, लेकिन दावत खिलाने का इतना शौक है तो गांव के सौ दो सौ गरीबों को दावत खिला कर या हर दिन दो चार गरीबों को खाना खिलाकर दावत खिलाने का शौक क्यों नहीं पूरा करता, क्या बारातियों को दावत खिलाने पर सवाब मिलेगा और गरीबों को खिलाने पर अजाब और फिर हमारा यह सवाल है कि आखिर चार छः लोगों को बारात जाने या ले जाने का सुबूत कहां से मिल गया? ऐसे लोग कुर्आन और हदीस का हवाला या सुबूत मांगते हैं! वही बतलायें कि हम बतलायें क्या? हमारा कहना है कि चार छः लोगों को खाना लिखाना किसी के लिये भी मुश्किल नहीं है चार छः लोगों का जाना फर्ज और वाजिब नहीं सिर्फ दुल्हा और उसका बाप चला जाये सिर्फ दुल्हा चला जाये या सईद बिन मुसय्यब की तरह दुलहन का बाप ही उसे दुल्हा के घर छोड आये। रही बात पचास साठ बारातियों की तो क्या कोई खुशी से यह अजाब सहने के लिये तैयार है, खुशी नहीं मजबूरियां सुख नहीं, बल्कि यह रस्म व रिवाज की मेहरबानी है कि खुशी के नाम पर वह बारात बुलवाने पर तैयार हो जाता है, लेकिन आम तौर से लड़के वाले दबाव डालते हैं हम इतने बाराती आयेंगे और बहुत से लड़के वाले इतने बेशर्म होते हैं जो खाने की मांग करने के अलावा अपने करीबी रिश्तेदारों के लिये वेदाई की भी मांग करते हैं यह मांग भी लड़की का सरपरस्त (अभिभावक) खुशी से सहन कर लेता है ऐसे लोग कितने घटिया और गिरे हुये हैं, यह दूसरे के गाढ़े पसीने की कमाई से शोहरत और नाम कमाना चाहते हैं आम तौर से देखने में आता है कि कई तरह के खाना खाकर लौटने वाले को सुबह अपने घर पर वलीमे में गोश्त की दो बोटियां भी नसीब नहीं होती, परेशान दिखायी देता है, ऐसा लगता है कि सारी खुशी और पैसे की रेल पेल लड़की के बाप को हासिल है और लड़के का बाप गम और बदनसीबी में घिरा हुआ है। और अगर वेदाई लेने की इतनी आरजू है तो लड़के का बाप लड़की के बाप को दस बीस हजार रूपये दे दे कि मेरे रिश्ते दारों को वेदाई दे देना खूब इज्जत मिल जायेगी मगर यहां शोहरत दूसरों की दौलत पर हासिल की जा रही है। कहने का मतलब यह है कि लड़की का बाप यह तमाम मुतालबा मजबूर होकर खुशी के नाम पर मान लेता है। उन खाते पीते घरानों का कोई एतबार नहीं होगा जो अपनी दौलत दिखाने के लिये बाारात लाने और जहेज भी देने की जिद करते हें जब कि वह झूठे होते हैं उनको अपनी बेटी को विरासत का हक देने के बारे में कोई चिंता नहीं होती है और ना अपने बेटों को उन का हिस्सा देने की वसिय्यत करते हैं और भाइयों के कबजा करने के चलन को देखते हुये ना ही उनका हिस्सा दिलाने का कोई इंतेजाम करते हैं। एक ऐसी चीज (बारात जहेज) जिसका इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं उसके लिये इसरार और सिफारिश करना और इस्लाम के एक हुक्म (वरासत) को पैरों तले रौंद डालना क्या दीन से लापरवाही नहीं है?

बारात ले जाने के पचधर ओलमा से एक सवाल करते हैं कि उन चोर बारातियों के खाने का हिसाब किस की गर्दन पर जायेगा जो बुलाये नहीं जाते मगर लड़के वाले उसे भी साथ ले लेते हैं। मिसाल के तौर पर यह तय होता है कि सौ बाराती आयें गे लेकिन २५ या ५० ज्यादा पहुंचते हैं अब वही बतायें कि इन २५ और ५० चोर बारातियों का हिसाब किस के जिम्मे होगा। लेकिन लड़की का बाप यह मुसीबत भी हंसी खुशी कुबूल कर लेता है और अगर इस को मानने से इंकार कर दे तो बात बिगड़ सकती है क्या खैरूल कुरून के मुसलमान बारात जैसी ख़ुराफात से आगाह थे अगर यह नेकी और भलाई की बात होती तो वह यह काम करने के लिए बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते। कहने का मतलब यह है कि खुशी के नाम पर लड़की के सरपरस्त ही को हर बोझ बर्दाश्त करना पड़ता है जब कि लड़की के बाप का दिल बेटी को भेजने के तसव्वुर से ही चूर चूर हो जाता है, जो शख्स अपने दिल के टुकड़े को एक अंजानी जगह के लिये भेज रहा हो वह भला खुश क्यों होगा? खुश नहीं होता बल्कि अनेकों शंका और भय से दुखी होता है जिसका इजहार अपनी सजल (डबडबायी) आखों से करता है। खुश तो लड़का और उसका बाप होता है जो बगैर किसी मेहनत एक अनमोल चीज़ उनको मिल जाती है इसलिये लड़के वालों को लड़की के रिश्तेदारों और गांव वालों को अपने घर बुलाकर खाना खिलाना चाहिये ना कि लड़की वालों को, घरेलू सामान लड़के वालों की तरफ से लड़की के बाप को दिया जाना चाहिये ना कि लड़की के बाप की तरफ से। लड़की के बाप ने अपने दिल के टुकड़े को लड़के बालों के हवाले करके उन पर बड़ा उपकार किया है इस लिये लड़के वालों को इस उपकार (एहसान) का बदला कुछ ना कुछ देकर चुकाना चाहिये और लड़के के अपने घर वालों से जुदाई के बाद घर वालों को दुख होता है उसकी भरपाई के लिये कोशिश करनी चाहिये और लड़की को पैर की जूती ना समझ कर आंखों का तारा बनाना चाहिये। एहसान का बदला तो सिर्फ एहसान से ही दिया जा सकता है। लेकिन यहां तो मामला बिलकुल उलटा है कि वह लड़की भी दे रहा है और उसी को लूटा भी जा रहा है। जाहिलियत के दौर की तरह हमारे समाज में लड़कियों की हैसियत जूते चप्पल जैसी भी नहीं अगर कोई किसी को तोहफा के तौर पर एक जोड़ी चप्पल दे दे तो तोहफा देने वाले के लिये लेन वाला का दिल नर्मी और शुकिये के जजबात और भावना से भर जाता है लेकिन लड़की जैसी अनमोल चीज मिलने के बाद उससे अधिकृत चीजों की मांग करना इस बात की दलील है कि लड़कियों की हैसियत यकीनन जूते चप्पल से भी गिरी हुयी है।

दहेज के भूखे भेड़िये कहते हैं कि लड़की के अभिभावक (सरपरस्त) हंसी खुशी से दहैज देते हैं लेकिन आश्चर्य की बात है कि लड़की के बाप को कौन से ऐसी अप्रत्याशित नेमत मिल गयी है जिस से खुश हो कर उस ने बेटी की शादी के मौके पर दानशीलता (सखावत) का दर्या बहा दिया। लेकिन सवाल यह है बाप ने यह खुशी हासिल करने के लिये किसी बेवा (विधुवा) की सहायता क्यों नहीं की, किसी अनाथ (यतीम) की देख भाल क्यों नहीं की, किसी गरीब की मदद क्यों नहीं की या किसी बीमार का एलाज (उपचार) का प्रबन्ध कर के अपना दामन खुशियों से क्यों नही भर लेता। उसे दुनिया में भी खुशी मिलती और नबी स० के इस फरमान का पात्र (मुस्तहिक) भी बन जाता ''जिस ने किसी मोमिन की एक परेशानी दूर कर दी तो क्यामत (महापरलय) के

दिन उल्लाह उस के दुखों में से एक दुख को दूर कर देगा''। शादी के मौके पर लाखों का सामान तोहफे में देने वालों से जब किसी समाजी और जरूरी कामों में खर्च के लिये कहा जाता है तो उन्हें साँप सूँघ जाता है, इस तरह का काम करने से साफ मना कर देते हैं। लड़की वाले अपने दामाद और समधी को जो कुछ भी देते हैं वह सिर्फ रिश्वत है क्यों कि उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि अगर यह सामान रिश्वत के नाम पर नहीं दिया जाये गा तो उस की बेटी के हाथ पीले नहीं हों गे। जिस तरह एक मामूली आदमी जब किसी काम से किसी सरकारी विभाग में जाता है तो उस दफतर के बार बार चक्कर लगाने से बचने के लिये खुशी से ''रिश्वत'' दे देता है। वह जानता है कि अगर वह रिश्वत का आफर नहीं करे गा तो उसके काम में तरह तरह के अड़चन और रोड़े डाले जाते रहेंगे इसी रिश्वत की देन है कि अच्छी और नेक सीरत वाली लड़कियां अपने बाप के सर का बोझ बनी हुयी हैं क्योंकि उनके बाप के पास रिश्वत देने के लिये कुछ भी नहीं है। आप मालदार ठहरे और तोहफे के बहाने दहेज दे दिया, यह तो आपकी अदा ठेहरी, लेकिन वह गरीब जो आधी रोटी के लिये दर दर की ठोकर खा रहा है, क्या करे। ऐसे गरीब आदमी को अपनी बेटी की शादी के लिये कोई उधार भी नहीं दे गा और अगर कोई दे भी तो फिर कहां से वापस करे गा? तो क्या गरीबी के जुर्म की सजा यही है कि आत्म हत्या कर ले, या अपनी बेटी का गला दबाकर काम तमाम कर दे, या फिर अपनी बिन बियाही बेटी को घर में बिठा कर अपनी किस्मत को कोस्ता रहे। हदये और तोहफे ने लोगों को इतना पत्थर दिल और बेरहम (क्रूर) बना दिया है कि बेटी चाहे बूढ़ी ही क्यों न हो जाये लेकिन वह दहेज बनाम तोहफा के बगैर शादी के लिये तैयार नहीं।

किसी चीज पर रोक का उसूल यह है कि अगर एक मुबाह काम किसी बड़ी खराबी का सबब बन रहा हो तो उसको छोड़ना ज्यादा बेहतर है। इस उसूल के अनुसार शादी के मौक़े पर तोहफा न देना ही बेहतर है क्योंकि खुशी के नाम पर दिया जाने वाला तोहफा गरीबों यहां तक कि मालदारों के लिये भी जान का जंजाल बन चुका है जिसकी वजह से पता नहीं कितनी लड़कियां बुढ़ापे की दहलीज़ पर कदम रख चुकी हैं। अब आप ही बतायें कि यह तोहफा कितनी बड़ी खराबी का सबब बन रहा है और किस तरह लड़की के बाप के लिये अज़ाब बन गया है। सिर्फ इतना ही नहीं यही हदया और तोहफा न आने के सबब कितनी ही बेटियों की जिंदगी अजीरन हो चुकी है और असंख्य (बेशुमार) दुलहनों के शरीर पर तेल छिड़क कर जला दिया गया और कितनी ही लड़कियों को मौत के घाट उतार दिया गया। कुरआन कहता है बेरहम दिलों के लिये बर्बादी हैं, ऐ अल्लाह मेरी कौम को हिदायत दे क्योंकि वह नहीं जानते। क्या इतनी खराबियों और बुराइयों के बावजूद दहेज के पचधर और समर्थक ओलमा तोहफा के नाम पर दहेज की वकालत करेंगे? और दहेज की वैधता को अपने अहंकार का मस्ला बना कर रोक थाम के उसूल को अपनी जूतियों की नोक पर रखेंगे। ऐ अल्लाह मुसलमानों के ओलमा और इमामों को हिदायत दे। सब जानते हैं कि तोहफा देना सुन्नत है और लड़कियों को वरासत में हिस्सा देना फर्ज। तो क्या सुन्नत की वकालत करने वाले वरासत के फर्ज होने या उसे लागू करने की भी वकालत करेंगे? किसी को तोहफा देने का इतना ही शौक है तो अपनी लड़की को अधिकार देकर यह शौक क्यों नहीं पूरा करता, तोहफे के नाम पर कुछ मामूली चीज़ें दे देना अक़ल

के मुताबिक लगता है लेकिन तोहफे में पैसा गाड़ी घोड़ा देना अक़्ल और समझ से दूर की बात है अर्थात इसमें कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है।

खुशी के नाम पर पैसा देने के बारे में एक उपदेशपूर्ण (इबरत नाक) और तकलीफदेह वाक्या बयान करता हूं, मेरे एक दोस्त ने जो सऊदी में इस्लाम की तब्लीग का काम करते हैं, उन्हों अपने भाई की शादी में दावत दी, मैंने पूछा कि दहेज में क्या मिल रहा है तो कहा कि मैंने कुछ मांगा नहीं है, मैंने कहा कुछ तो दे ही रहा होगा उन्होंने कहा, हां। कुछ बुरी रस्मों को देखते हुये मैं शादी में नहीं गया लेकिन बारातियों से पता चला कि जब लड़की के बाप ने खुशी से पैसे लाकर दिये तो इस पर लड़के वाले गुस्सा हो गये और कहने लगे कि तुम मेरी बेइज्जती कर रहे हो! सवाल यह है कि जब वह खुशी से दे रहा है तो चाहे अकेले में दे यह भरी महफिल में, इसमें गुस्सा होने वाली कौन सी बात हो गयी लेकिन दिल में छुपा हुआ चोर बाहर निकल आया। भरी महफिल में पैसे लेने से इंकार ऐसे ही है जैसे कि सरे बाज़ार दूसरे लोग रिश्वत लेने से इनकार कर देते हैं। मुहम्मद स० के फरमान के मुताबिक गुनाह यह है कि वह तुम्हारे दिल में खटके और तुम यह न चाहो कि लोगों को इस की भनक लगे। जब ऐसी बात है तो तोहफा देने वाले चुपके से क्यों नहीं तोहफा देते ताकि यह तोहफा गरीबों के लिये जान का जंजाल न बन जाये। इसमें भी दिखावा है इस लिये तोहफा देने वाला यह चाहता है कि उसके तोहफे की खूब चर्चा हो। यहां यह सवाल पैदा होता है कि क्या सिर्फ शादी ही के दिन तोहफा देना सुन्नत है या इस दिन का तोहफा दूसरे दिनों की बनिस्बत(अपेक्षा) ज्यादा बेहतर और अफजल है, बाकी पूरी जिंदगी में तोहफा देना अवैध और हराम है? अगर हराम नहीं तो दूसरे मौके पर इस सुन्नत का प्रदर्शन या अमल क्यों नहीं किया जाता। बेटी की शादी के मौके पर तोहफे की बारिश करने वाले कुछ लोग अकीका की दावत में इस लिये नहीं जाते हैं कि कहीं सौ दो सौ रूपये के कपड़े न खरीदने पड़ जायें, यह है हमारे समाज के तमाशे। अक़ीक़ा के मौके पर हदया की बात छोड़ दें, वही दमाद जिस को शादी पर हजारों और लाखों का सामान दिया गया था जब ससुराल आता है तो ससुर और घर वालों की यही इच्छा होती है कि दुल्हा विदाई ने लेता तो बेहतर होता खुशी से दहेज देने वालों को कभी यह तौफीक होती है कि गरीब रिश्तेदार को उसकी जरूरत के वक्त मदद कर दें, हदया या तोहफा देना तो दूर की बात है, सख्त जरूरत के वक्त इस डर से उधार भी नहीं देते हैं कि कहीं डूब न जाये या न मिले। दिल की खुशी का नाम खुशी है और दिल की खुशी के बगैर किसी का माल खाना दूसरे के लिये जाइज नहीं। मुहम्मद स० ने फरमायाः किसी आदमी का माल उसकी तरफ से हंसी खुशी इजाजत मिल जाने के बाद ही जाइज़ है। इस खुशी की मिसाल ऐसे ही है कि कोई लुटेरा घर में घुस आये और हाथ में बंदूक लेकर घर के मालिक से कहे कि खुशी से ५०० रू दे दो तो मैं शराफत से किसी को तकलीफ पहुँचाये बगैर घर से निकल जाऊँ गा। पाठक गण! आप ही बतायें कि घर का मालिक इसके अलावा और क्या कह सकता है कि ५०० ले लो और घर से निकल जाओ तो क्या आप भी इसको खुशी का नाम देकर जाइज (वैध) ठहरायें गे?

जुनूं का नाम खिरद रख दिया खिरद का जुनूं

जो चाहे आप का हुस्न करिश्मा साज़ करे

कुछ ओलमा कहते हैं कि खुशी

शेष पृष्ठ १६ पर

देश-प्रेम

सईदुरहमान सनाबिली

इस्लाम ने जीवन के हर मैदान के बारे में नियम एवं सिद्धांत बताये हैं जिस का अनुसरण करना उसके पैरोकारों के लिये अनिवार्य है। इस लेख में लेखक ने देश प्रेम के बारे में इस्लाम की अवधारणा को स्पष्ट किया है जिससे पता चलता है कि इस्लाम देश से प्रेम और वफादारी का प्रोत्साहन करता है और देश से बेवफाई और नफरत को हतोत्साहित और निन्दा करता है। (संपादक)

इस्लाम एक विश्व व्यापी धर्म है। इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि वह पूर्णतः प्रकृति के अनुकूल है चूंकि इन्सान समाज में मिल जुल कर रहना पसन्द करता है इसलिये वह निश्चित रूप से अपने इस देश, राज्य और गाँव से दिल की गहराइयों से प्रेम करता है जहाँ उस की जन्मभूमि होती है और जहां वह रहता खाता है उसकी मिटटी की मुहब्बत उसके दिल में बैठ जाती है और उस जगह पर उसके साथी संबन्धियों की एक बड़ी तादाद होती है जिसकी वजह से एक इन्सान अपनी जन्म भूमि को एक अंजान जगह की अपेक्षा ज्यादा प्रेम करता है और जिस तरह से एक माली अपने चमन को हर प्रकार से सजाने की चिंता में रहता है और हर प्रकार के नुकसानात से बचाने के लिये निरन्तर प्रयास करता है इसी प्रकार एक इन्सान अपने देश राज्य गांव के लिये भला चाहता है और उसकी इच्छा होती है कि उसके देश की आर्थिक हालत मजबूत हो, उसके देश के सभी वासी समृद्ध और सम्मान पूर्वक जीवन गुजारें।

इतिहास गवाह है कि हर दौर मैं जब भी और जहां भी मुसलमानों को अपने देश से प्रेम का इजहार करने का अवसर मिला उन्होंने गनीमत समझा और उसको सर आखों पर बिठाया। स्वंय अपने देश भारत पर जब अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया तो मुसलमान अंग्रेजों से मुकाबले में पेश पेश रहे। सादिक पुर के ओलमा जो सहीह आस्था रखने वाले मुसलमानों का परिवार था जिनके उल्लेख के बिना स्वंत्रता सेनानियों की सूची अधूरी होगी की कुर्बानियां किसी से भी छिपी नहीं है। इसी देश भारत की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के अन्दर एक एक दिन में सैकड़ों बल्कि हजारों की तादाद में मुसलमानों को अंग्रेज़ों ने कत्ल किया तब यह देश अत्याचारी अंग्रेज़ों के शासन से आज़ाद हो सका है। मुसलमानों ने यह सब कुर्बानियां केवल इसलिये दीं कि उन्हें मालूम था कि अपनी जन्म भूमि, असल वतन और रहन सहन स्थली से प्रेम इस्लाम के विरूद्ध नहीं बल्कि इस्लाम के अनुकूल है।

हदीस की किताबों में मौजूद है कि जब मक्का के मुश्रिकों ने आपको अपना जन्म भूमि (वतन) छोड़ने पर मजबूर किया और आप मक्का से मदीना के लिये निकले तो आपने शहर से संबोधित करते हुये कहा था ऐ मक्का तू कितना बेहतर और सौन्दर्य शहर है अगर तुम्हारे वासी तुम्हारे दामन से मुझे निकलने पर मजबूर न करते तो अल्लाह की सौगन्ध मैं तुझको छोड़ कर किसी दूसरी जगह रहने के लिये न जाता। (सुनन तिर्मिज़ी अल्लामा अलबानी ३९२६, इब्ने हिब्बान १०२६, मुस्तदरक हाकिम १/४८६, मुख्तारा,

जिया मुकद्दसी ने हदीस को सहीह करार दिया है) ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की अपने देश से मुहब्बत की यह हालत थी कि जब मक्का हिजरत करके मदीना आये तो बहुत दिनों तक मक्का की याद अपने दिल में संजोये रहे और मक्का से जो भी मदीना आता तो उससे मक्का के बारे में पूछते लेकिन कुछ वर्षों के बाद जब आप मदीना में निरन्तर रहने लगे तो अल्लाह से आप यह दुआ करने लगे'' ऐ अल्लाह तू मदीना को हमारे लिये वैसे ही प्रिय बना दे जैसा कि मक्का प्रिय था। (सहीह बुखारी, १८८६ मुस्लिम ४८०, १३७६) और एक वक्त ऐसा भी आया कि मदीना से मुहब्बत की यह हालत थी कि जब सफर से वापस होते और मदीना पर नज़र पड़ती तो आप अपनी सवारी की रफतार तेज कर देते थे। (बुखारी १८०२, तिर्मिज़ी २७३७)

इन हदीसों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि देश से प्रेम एक इस्लामी कर्म है

ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने मक्का और मदीना की ज़िन्दगी में दोनों शहरों से मुहब्बत व्यक्त करके अपने पैरोकारों को इस बात की शिक्षा दी कि इन्सान जिस धरती पर रहता सहता है उससे मुहब्बत प्राकृतिक है। अपने देश से मुहब्बत का इज़हार ईशदूत हज़रत मुहम्मद के साथियों ने हिजरत के अवसर पर भी किया था जब उनको सताया गया, माल व जायदाद को हड़प कर लिया गया, तो अपने रब की खुशी के लिये न चाहते हुये भी पहले हब्शा और फिर मदीने की तरफ हिजरत की। इस प्रकार जहां वतन से निकाले जाने पर उनके दिल गम व दर्द से बोझल हुये जा रहे थे लेकिन अपने पालनहार की खुशी ईशदूत हज़रत मुहम्मद के हुक्म और धर्म की सुरक्षा के लिये उन्होंने वतन को छोड़कर वतन (मातृभूमि) से मुहब्बत का इस्लामी दृष्टि कोण पेश किया। इसी प्रकार देश विरोधी गतिविधियों को भी वैध नहीं करार दिया जा सकता।

वतन की तरफ से दिफा में वह तमाम चीज़ें शामिल हैं जो किसी भी तरह से देश के लिये लाभदायक हों। उदाहरण के तौर पर शासकों की तरफ से बदगुमानी को दूर करना, शंकाओं को पनपने से पहले ही रोकना और अफवाहों पर अंकुश लगाना। इस्लाम अम्न व शान्ति का धर्म है उसने बिखराव, फसाद, अशान्ति के तमाम दरवाज़ों को बन्द कर दिया है इसी लिये कुरआन और हदीस में इस बात की शिक्षा दी गयी है कि जब तक शासक पाप करने पर मजबूर न करें उनके अहकामात (आदेशों) का पालन किया जाये और उनसे इखतलाफ से बचा जाये। ईशदूत हज़रत मुहम्मद स०अ०व० ने फरमायाः तुम शासकों का आज्ञापालन को लाज़िम पकड़ो अगरचे किसी साजिश के तहत तुम्हारा शासक हबशी गुलाम ही क्यों न बन जाये। (अबू दाऊद, ४६०७, तिर्मिज़ी २६७ इब्ने माजा, ४३, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है)

इस्लाम में पक्षपात के लिये कोई जगह नहीं है और इन्सानों का विभिन्न क्षेत्रों और परिवारों में विभाजन केवल परिचय के लिये है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया है ''ऐ लोगों हमने तुम्हें एक मर्द और औरत से पैदा किया है और तुम्हें विभिन्न खानदानों और कबीलों में बांट दिया है ताकि एक दूसरे को पहचान सको तुम में सबसे बेहतर वह है जो अल्लाह से सबसे ज़्यादा डरने वाला होगा। बेशक अल्लाह तआला जानने वाला और खबर रखने वाला है।'' (अल हुजरात-१३)

(पाक्षिक जरीदा तर्जुमान १६-३१ जुलाई २०१७ से अनुवाद)